23 / 12 / 83 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

डबल लाईट की स्थिति से मेहनत समाप्त करने का अनुभव

➢➢ आकाश सिंहासन छोड़ परमधाम से

➳ _ ➳ जगमगाती हुई एक परमज्योति

→ सूक्ष्म वतन में आकर

◆ ब्रह्मा के मस्तक में

• विराजमान हो जाती है

➳ _ ➳ अपना भृकुटी सिंहासन छोड़

→ मैं आत्मा ज्योति

◆ सूक्ष्म शरीर धारण कर

• सूक्ष्म वतन पहुँच जाती हूँ

➳ _ ➳ ब्रह्मा के मस्तक और नयनों से

→ निकल रहा दिव्य प्रकाश

◆ मेरे सूक्ष्म शरीर के चारों ओर

• एक दिव्य आभामंडल का

• निर्माण कर रहा है

➳ _ ➳ मेरा सम्पूर्ण सूक्ष्म शरीर

→ दिव्यता से ओतप्रोत हो गया है

◆ चारों ओर लाइट ही लाइट

• डबल लाइट फ़रिश्ता बन

• चमक रहा हूँ

➢➢ मैं आत्मा डबल लाइट की स्थिति से

➳ _ ➳ हर कर्म कर करते हुए

→ सफलता प्राप्त कर रही हूँ

◆ हर प्रकार की मेहनत

◆ और मुश्किल से

• सहज छूट गई हूँ

➳ _ ➳ ट्रस्टीपन के भाव से

→ ईश्वरीय सेवा की भावना से

◆ बाबा के डायरेक्शन से

• निश्चिन्त और न्यारी होकर

• हर कर्म कर रही हूँ

➳ _ ➳ तन, मन, धन

→ सब बाबा का है

◆ ये शरीर भी बाबा का

◆ ये घर भी बाबा का

◆ ये बच्चे भी बाबा के

◆ ये सेवा भी बाबा का

• बस मैं और मेरा बाबा

➳ _ ➳ मेरे हर संकल्प, बोल और कर्म में

→ एक बाबा ही समाया हुआ है

◆ एक बाबा की मुहब्बत में

• लवलीन हो गई हूँ